L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART - III
PAPER - III
PSYCHOLOGY (HONOURS)
TOPIC - Antecedent Factors of Behaviourism.

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Assistant Professor.
Guest Teacher
V.S.J. College, Rajnagar
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumardbg2018@gmail.com.

मनोविज्ञान में कोई भी आन्दोलन या सम्प्रदाय अचानक नहीं प्रारम्भ हुआ है। इसके कुछ पूर्ववर्ती कारक (antecedent factors) होते हैं। जिन्हें उनकी उत्पत्ति मानी जाती है। व्यवहारवाद (behaviourism) इसका अपवाद नहीं, क्योंकि व्यवहारवाद की स्थापना 1913 में जे० बी० वाटसन (J. B. Watson) द्वारा की गयी, इसके भी कुछ महत्वपूर्ण पूर्ववर्ती कारक (antecedent factors) हैं। जिनका वर्णन निम्नांकित है।

(i) प्रारंभिक दार्शनिक प्रवृति जिसमें वस्तुनिष्ठता पर बल डाला गया था,
(ii) पशु मनोविज्ञान (Animal Psychology)
(iii) पावलोव का अनुबंधित प्रतिवर्त -
(iv) प्रकार्यवाद - (Functionalism)

(i) Early philosophical trend emphasising objectivism)

वाटसन (Watson) अपने जीवन-वृत्ति के प्रारंभिक वर्षों में प्रारंभिक वर्षों में दार्शनिकों का अध्ययन किये थे, और वे अरस्तू एवं अन्य पुरातन ग्रीक दार्शनिकों के दर्शनशास्त्र से पूर्णतः परिचित थे, अरस्तू अपने प्रसिद्ध पुस्तक डी० एनिमा (De Anima) में शरीर तथा उसके कार्य (Functions) जैसे- गति, पाचन क्रिया, (digestion), संवेदन तथा तर्कना (reason) आदि के बारे में गंभीरता से प्रकाश डाला था, उन्होंने यह भी कहा था, कि ये सभी कार्य शरीर की क्रियाएँ (activities) हैं। तथा शरीर की क्रिया भी कार्य से भिन्न नहीं है। इस अर्थ में अरस्तू को पहला व्यवहारवादी (behaviourist) माना जा सकता है जिसने मनोविज्ञान में वस्तुनिष्ठ तथा प्रेक्षणीय घटनाओं के अध्ययन पर बल डाला है। वाटसन के द्वारा भी इन विचारों

Scanned with CamScanner

II

से काफी अधिक प्रभावित हुआ था।

इन तीन दार्शनिकों के अलावा कुछ फ्रांसीसी दार्शनिकों के योगदान भी व्यवहारवाद के लिए प्रेरणास्रोत रहे। इनमें जूलियन ऑफ़ ला मैट्री, पामेर, कैबानिस तथा अगस्त कॉम्टे प्रधान थे, ला मैट्री द्वारा आत्मनिष्ठता के विरोध में वस्तुनिष्ठता पर जोर दिया गया, इनके मतों का उनका विचार था कि मनुष्य वास्तव में एक मशीन के समान होता है। आशय यह कहना है कि उनका विश्वास था कि प्रत्येक मानसिक क्रिया की दैहिक व्याख्या सम्भव है। परन्तु तथा मानव शरीर को मशीन ही समझते थे, परन्तु वे आत्मा (Soul) को शरीर से भिन्न नहीं मानते थे, इस तरह ला मैट्री तथा दे कार्ते दोनों मिलकर एक साथ मनोवैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता जिसमें आत्मनिष्ठ आंकड़ों के विरुद्ध वस्तुनिष्ठ आंकड़ों एवं प्रेक्षण को प्रतिस्थापित किया गया, को और अपने अपने प्रभाव जारी रखे, कैबानिस इनसे एक कदम और आगे बढ़कर मन (mind) को वस्तुनिष्ठ शब्दों खासकर दैहिक या मस्तिष्कीय कार्य के रूप में परिभाषित किया, उन्होंने कहा कि मस्तिष्क चिंतन का एक अंग ठीक उसी तरह से है। जिस तरह से आमाशय पाचन क्रिया का एक अंग होता है। इस तरह से कैबानिस एक यांत्रिक दृष्टिकोण अपनाए रहे तथा दैहिक व्याख्या के प्रति झुके रहे। इसी कारण से वे अपने दृष्टिकोण का मनोवैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता को परिणाम देते रहे। अगस्त कॉम्टे ने वस्तुनिष्ठता से एक कदम आगे बढ़कर एक नये आन्दोलन की शुरुआत की जिसे प्रत्यक्षवाद (Positivism) कहा गया, इस विचारधारा के अनुसार सिर्फ प्रत्यक्ष ज्ञान ही वैध (valid) होता है। तथा इस तरह का ज्ञान सिर्फ वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण से प्राप्त होता है। इस तरह से प्रत्यक्षवाद द्वारा अन्तर्निरीक्षण विधि को अस्वीकृत किया अर्थात तथा मनोविज्ञान के प्रति आत्मनिष्ठ दृष्टिकोण की आलोचना की गयी, (Comte) के प्रत्यक्षवाद से काफी व्यवहारवाद प्रभावित हुआ तथा व्यवहारवाद की स्थापना में अहम् इस विचार

III

विचार को प्रवृत्ति स्थान दिया।

(i) पशु मनोविज्ञान - (Animal psychology) ऐसे भी कहा जाता है। चार्ल्स डार्विन के विकासवादी सिद्धान्त के कारण पशु मनोविज्ञान के अध्ययन में लोगों की अभिरुचि काफी बढ़ गयी, वे पशुओं का प्रेक्षण किये, तथा उनके परिणामों को संकलित करके अपनी मशहूर पुस्तक 1872 में प्रकाशित किया, इन अध्ययनों में वे मानव द्वारा अभिव्यक्त संवेगों तथा निम्न स्तर के पशु (lower animals) द्वारा अभिव्यक्त संवेगों में घनिष्ठ समानता पायी, उदाहरणार्थ, क्रोध की अवस्था में मनुष्य तथा निम्न स्तर के पशु दोनों ही दाँत पीसते नजर आते हैं।

जार्ज जॉन रोमैन्स (1848-1894) डार्विन के दोस्त थे, तथा वे पशु व्यवहारों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न स्रोतों से आँकड़े संग्रह किये, वे इसे अपनी पुस्तक (Animal Intelligence 1886) में प्रकाशित किये, वे आँकड़े संग्रहण के एक विशेष विधि जिसे (anecdotal method) कहा जाता है को विकसित बनाये, यद्यपि वे अपने इस कार्य में कुछ वस्तुनिष्ठ नियमों का उपयोग किये थे, फिर भी कुछ अप्रमाणित तथा अवैज्ञानिक प्रेक्षणों से अपने आप को छुटकारा नहीं दिया गया, उनके अध्ययनों की एक दूसरी परिसीमा (limitation) मानवीकरण है। दूसरे शब्दों में पशु व्यवहार में मानवीय मानसिक गुणों, प्रेरणा एवं क्षमताओं की अवलोकन की प्रवृत्ति इनके अध्ययन की दूसरी परिसीमा थी, रोमैन्स के मानवीकरण के माध्यम से मनुष्यों तथा पशुओं के बीच एक समानता (continuity) प्रदान करने की कोशिश की थी, यद्यपि रोमैन्स के अध्ययनों में कुछ खामियाँ थीं, फिर भी यह कहा जाता है कि उनके अध्ययनों से पशु व्यवहार के प्रारंभिक अध्ययन को प्रेरणा मिली तथा बाद में वस्तुनिष्ठ तथा प्रयोगात्मक अध्ययन करने के द्वार खुल गए, पशु व्यवहार के अध्ययन में दूसरे महत्वपूर्ण व्यक्तित्व सी०एल० मार्गन (1852-1936) है।

(iv)

पशु व्यवहार पर उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं, इनमें से सबसे लोकप्रिय पुस्तक (Introduction to Comparative Psychology) थी, उन्होंने कुछ ऐसे अध्ययन भी किये, जिसमें मानव व्यवहारों तथा निम्नस्तर के पशुओं के व्यवहारों की तुलना की गई, इन्हीं अध्ययनों में अर्द्ध-प्रयोगात्मक प्रकार के प्रेक्षणों की शुरुआत किया गया, जिसमें प्रयोगशाला के नियंत्रित अवस्थाओं तथा पशुओं के स्वाभाविक परिस्थिति की अवस्था दोनों की कमी निश्चित रूप से पूरी होती थी।

(iii) जीव वैज्ञानिक अनुबंधित प्रतिवर्त :- पावलव द्वारा प्रतिपादित अनुबंधन प्रक्रिया की इस वाटसन के व्यवहारवाद के उद्भव में काफी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, इन प्रभावों में मनोविज्ञान के प्रभाव विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पशुओं अनुबंधन प्रयोग व्यवहार के विकास एवं परिमार्जन के लिए एक वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक विधि के रूप में उभर कर आया, इससे, वाटसन के मनों में पावलव द्वारा प्रतिपादित प्रयोगात्मक रूपात्मक से वाटसन काफी प्रभावित हुए और वे मानव व्यवहार के अन्य प्रकारों की व्याख्या में सम्मिलित किये। वाटसन ने पशुओं पर कुछ अध्ययन करने के स्नातक से थोर्नडाइक के साथ सम्पर्क बनाये रखे, अतः यह बिल्कुल ही स्वाभाविक था, कि वाटसन थोर्नडाइक से प्रभावित होते हैं। स्माल (Small) ने 1900 में पहली भूल-भुलैया का निर्माण किया था, जिसका पशु शोध में काफी अधिक प्रयोग किया, वाटसन ने चूहों के व्यवहार के अध्ययन के लिये स्माल मार्ग बनाये गए।

Dr. Pramod Kumar Sahu
Date - 18/08/2020
Sub - Psychology

Scanned with CamScanner